International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

वैदिक साहित्य में विहित पर्यावरण संरक्षण की परिकल्पना वर्तमान संदर्भ में

डॉ. सुमेर सिंह बैरवा, सहायक आचार्य - संस्कृत
राजकीय महाविद्यालय राजगढ़ -अलवर (राजस्थान)

'परितः आवरणम् इति पर्यावरणम्'

पर्यावरण शब्द परि तथा आ उपसर्गपूर्वक 'वृ' धातु से ल्युट लगने से व्युत्पन हुआ है। जिसका अर्थ है 'चारों ओर का आवरण या आच्छादन' तो इस प्रकार हम कह सकते हैं कि वह वस्तु जो हमें चारों ओर से घेरती है हम पर सीधा प्रभाव डालती है, पर्यावरण कहलाती है। 'पर्यावरण' शब्द फ्रेञ्च भाषा के 'इन्वारोरेन' से बना है, जिसका अंग्रेजी रूपान्तरण 'द राउण्ड' है जिसका अर्थ है चतुर्दिक दिशाएँ अथवा चारों ओर की आवृत्ति या घेरा है। पर्यावरण की समस्या से मुक्ति पाने के लिये हमें वेद की शरण में जाना होगा। 'वेद' ईश्वरीय वाणी है एवं अक्षय ज्ञान के स्त्रोत है। जीवन से सम्बन्धित सभी पक्ष वैदिक संहिताओं में वर्णित है। पर्यावरण को शुद्ध रखने के लिए वैदिक काल में लोग वैदिक रीति से यज्ञ-विधान से हवन करते थे। वैदिक ग्रन्थों के अनेक मंत्रा में पर्यावरणीय संचेतना के बीच परिलक्षित होते हैं। पर्यावरण सन्तुलन में वृक्षों का बहुत महत्त्व है। सृष्टि की सर्वोत्तम कृति, मानव हैं। मानव पृथ्वी का भूषण है। पृथ्वी ने मानव को सजाया है। आज मानव अपनी भौतिक सुख सुविधाओं के लिये वृक्षों की कटाई कर रहा है। वृक्षों को प्राचीन वैदिक साहित्य में पुत्रों से भी बढ़कर माना गया है। तुलसी, पीपल, बरगद आदि वृक्षों को पवित्र माना गया है, जिसके माध्यम से हमारी संस्कृति पल्लवित होती है। स्वार्थी मानव अन्धाधुन्ध वृक्षों एवं वनों की कटाई कर रहा है। काटे गये वृक्ष के स्थान पर अन्य वृक्ष नहीं लगाये जा रहे हैं। वनस्पतियों, वृक्षों, वनों की हमें रक्षा करनी चाहिये। वृक्ष कार्बन डाईआक्साइड के रूप में विषपान करते हैं और आक्सीजन के रूप में जीवनदान करते हैं। यदि संतुलन बिगड़ गया तो मानव शुद्ध वायु को प्राप्त नहीं कर सकेगा। विकासशील मानव ने प्रकृति की निःशुल्क निधि वसुन्धरा का मनमाना दोहन शुरू किया। विस्तृत निर्मल नीर संकुचित और दूषित होने लगा। लहलहाती वनस्पतियों से भरा धरातल वीरान होने लगा। वन्य जीवों का आबाद आवास उजाड़ कर मानव अपनी अट्टालिकाए बनाने लगा। तन मन को प्रफुल्लित करने वाली स्वच्छ वायु विषैली लगने लगी। कृषि, उद्योग, व्यापार, चिकित्सा यातायात राजनीति आदि नाना क्षेत्रों में विकास को अन्धाधुन्ध दौड़ से ऐसी गर्दगुबार उठने लगी जिसने जल, थल एवं नम की सहजता को नष्ट करने के साथ ही मानवीय विचारों को मानवीय विचार नहीं रहने दिया। प्रत्येक वस्तु की सहजता का हनन, स्वच्छता में गन्दगी को हम दोष कह सकते हैं। वर्तमान में पर्यावरण

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रदूषण एक गम्भीर समस्या है। पर्यावरण एवं प्रदूषण काया - छाया की भांति हुए हैं। आज हम स्वच्छ वायु के लिए परेशान हैं, स्वच्छ जल के लिए तरस रहे हैं। शान्त स्थान के लिए व्यग्र है। वेदों में वृक्षों की स्तुति करते हुए प्रार्थना की गयी है कि वे हमारी रक्षा करें, हमें वरदान दें

या ते रूद्र शिवा तनूः शिवा विश्वहा भेषजी।

शिवा रुतस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे ।।'

पौधे पृथ्वी की रक्षा करते हैं। हरियाली धरा का शृंगार है। हरी-भरी वृक्ष वनस्पतियों से युक्त भूमि को सुखदायिनी बताते हुए स्वागत योग्य बताया गया है

यस्यां वृक्षा वानस्पत्या ध्रुवास्तिष्ठन्ति विश्वहाः ।

पृथिवी विश्वधायसं घृतामच्छावदामसि ।।

पृथिवी को वेदों में ईश्वर का स्वरूप माना गया है। भूमि की रक्षा पूजा का एक अविभाज्य अंग था। अथर्ववेद के भूमिसूक्त में यह उपदेश दिया गया है कि अपनी मातृभूमि के प्रति मनुष्यों में श्रद्धा का भाव होना चाहिये। वहाँ भूमि को माता समझने एवं उसके प्रति नमस्कार करने का स्पष्ट शब्दों में उल्लेख किया गया है सा नो भूमिर्विसृजता माता पुत्राय में पयः' अर्थात् पृथिवी माता मुझे पुत्र के लिये दुग्ध आदि पुष्टिकारक पदार्थ प्रदान करें। नाना प्रकार के फल, औषधियाँ फसलें पेड़-पौधे इसी भूमि पर उत्पन्न होते हैं। पृथिवी सभी वनस्पतियों को माता एवं मेघ पिता है, क्योंकि वर्षा के रूप में पानी बहाकर मेघ पृथिवी का गर्भाधान करता है। अतः वर्षा से स्नेह रखने वाली मेघ से पालन की गयी उस भूमि को हमारा नमस्कार होवे। भूमि का प्रदूषण से बचाव करके पर्यावरण की रक्षा करना पूजा का एक अविभाज्य अंग था, जैसा कि कहा गया है।

यस्य भूमिः प्रभान्तरिक्षमुतोवरम् ।

दिवं यश्चक्रे मूर्धानं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मण नमः ॥'

अथर्ववेद में स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि जो औषधियाँ एवं वनस्पतियों को मारकर पृथिवी को सताता है, उन्हें पृथिवी हिला देती है, पीड़ित करती है एवं नष्ट कर देती है

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

ये ग्रामाः यदरण्यं या सभा अधि भूम्याम् ।

ये संग्रामाः समितयस्तेषु चारु वदेम ते।।

आज जल भी प्रदूषण से अछूता नहीं है। भागीरथी गंगा का जल भी प्रदूषित हो चुका है। जल ही जीवन है। यदि हम प्रदूषित जल का सेवन करेंगे तो हमारे स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा प्रदूषित जल अनेक रोगों का मूल कारण है। कारखानों से निकलने वाला रसायन जल प्रदूषण का मूल कारण है अप्स्वन्तरमृतमप्सुभेषजम्(अर्थ - जल में जीवन है जल में औषधि है)। वेदों में घर के समीप शुद्ध जलाशय को आवश्यक बताया गया है क्योंकि शुद्ध जल मनुष्य को दीर्घ आयु प्रदान करने वाला, प्राणों का रक्षक एवं कल्याणकारी है। इस प्रकार शुद्ध जल के बिना जीवन अधूरा हैं। वैदिक ऋचाओं में जल संरक्षण की संचेतना दिखायी देती है। जल शुद्धि के साथ ही साथ वायु की शुद्धि भी जीवन के लिये सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। अतः वायु भी शुद्ध रूप प्रवाहित होकर हमें रागरहित बनाये। श्वास लेने योग्य शुद्ध वायु समस्त रोगों से हमारी रक्षा करे एवं औषधियाँ प्रवाहित करके हमारे समीप लाये

आ वात वाहि भेषजं हि बात वाहि यद्रूपः ।

त्वं हि विश्वभेषजं देवानां दूत ईयसे ॥

त्रायन्तमिमं देवास्वायन्ता मरुता गणाः ।

त्रायन्ता विश्वा भूतानि यथायमरण असत् ॥

वायुमण्ड शुद्धिकरण हेतु 'यज्ञ' को वेदों में सर्वश्रेष्ठ साधन बताया गया है। यज्ञ में 'हवि' के रूप में डाले गये पदार्थ अग्नि में जलकर सूक्ष्म रूप में परिणत हो वायुमण्डल में प्रदूषण को नष्ट करते हैं। यज्ञीय अग्नि के द्वारा वायु, जल, पृथिवी आदि का प्रदूषण नष्ट हो जाता है। वैदिक साहित्य में यज्ञीय द्रव्यों से वातावरण को संभूषित करने वाला पुरुष पीड़ा से दूर रहकर शक्तिवान होकर पाप कर्मों से विमुख रहता है

व्यात्यां पवमानो वि शक्रः पाप त्यया।

व्यहं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेणसमायुषा ।।'

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पृथ्वीसूक्त में अथर्ववेद में ऋषियों ने कहा है कि 'हे धरती माँ जो कुछ भी तुझसे लूँगा, वह उतना ही होगा जिसे तू पुनः पैदा कर सके। तेरे मर्मस्थल पर या तेरी जीवन शक्ति पर कभी आघात नहीं करूंगा। 'ऋग्वेद में कहा गया है कि हमारी दैवीय नदियाँ हमारी रक्षा के लिए दयामय बनी रहें, वह हमें पीने के लिए जल प्रदान करती रहें और हम पर आनन्द और खुशियाँ बरसाती रहें। हमारी बहुमूल्य निधियों और मानव की भी विधाता, है नदियाँ हम तुम्हारे जल के. अरोग्यकर जल के आकाँक्षी हैं। ऋग्वेद के ऋषि केवल पंच भूतों के माहात्म्य से ही अवगत नहीं थे अपितु वे औषधियों तथा पादपों के गुणों से भी पूर्णत: अभिज्ञ थे। एक मंत्र में ऋषि औषधियों से फूलों एवं फलों से लदे रहने की कामना करता है

औषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवती प्रसूवरीः ।

अश्वः इव सजित्वरीवरुथः पारमिष्णवः ॥

ऋग्वेद के अरण्यानीसूक्त 10-16 में ऋषि देवमुनि ने अरण्यानी को वन की देवी के रूप में चित्रित किया है। उन्होंने छह मंत्रों में 'अरण्यानी' की स्तुति की है। इन मंत्रों में ऋषि के पर्यावरण के प्रति उत्कृष्ट मनोभावों को देखा जा सकता है। वह घोषित करता है, जब तक कोई अन्य 'अरण्यानी' पर आक्रमण कर उसे हानि नहीं पहुँचाता है तब तक वह भी किसी को कष्ट नहीं पहुँचाती है

न वा अरण्यानिहन्त्यन्यश्चेन्नाभिगच्छति।

स्वादोः फलस्य जग्ध्वाय यथाकामं निपद्यते॥

यजुर्वेद में 'वृक्षाणां पतये नमः' कहकर वृक्षों की रक्षा करने वालों के प्रति सत्कार प्रदर्शित किया गया है। आयुर्वेद में रोग निवारण के लिए प्रयोग में आने वाली वनस्पति कब, कैसे, किसके द्वारा उखाड़ी जाय, जिससे कोई अयोग्य पुरुषउस वनस्पति का वंश नष्ट न कर दे। ऋग्वेद का अरण्यानी' सूक्त बनों की रक्षा के लिए प्रेरणादायक है। जिस संस्कृति के मानने वालों की आयु का 3/4 भाग वन में ही व्यतीत होता हो जहां आज भी पीपल, बरगद, बेल और तुलसी जैसे वृक्षों का इस देश में पूजन होता हो, उससे अधिक वनों के महत्व को कौन जान सकता है? वृक्ष, वनस्पतियों को पृथ्वी की लोम राशि कहा गया है। वृक्षों में सबसे अधिक प्राण वायु पीपल का वृक्ष देता है। इसलिए हमारे वेदों में पीपल वृक्ष की पूजा की जाती है और इसको काटना घोर अपराध बताया गया है। उन्हें जीवन की अनिवार्य आवश्यकताओं के लिए प्रयुक्त तो किया जा सकता है किन्तु भोग.. विलास वैभव प्रदर्शन के लिए काटना पाप है। इससे पर्यावरण बिगड़ता है और संतति पर संकट आते हैं। प्रकृति का सौंदर्य बिगाड़ने का प्रयास पाप कर्म है। प्राकृतिक सम्पदा का उपयोग हो, उपभोग कदापि न हो। जो

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

देता है वही देवता है इसलिए वह पूज्य भी है और संरक्षणीय भी। वैदिक मंत्र हमारी मानसिकता बताते हैं कि नदियाँ देवी रूपा हैं, वृक्ष देवता हैं, पहाड़ देवता हैं, उनका निर्मल तन्मात्र स्वरूप श्रेयस्कर है। वैदिक अनुष्ठानों में पदार्थों की शुद्धता पर विशेष बल दिया गया है। क्योंकि शुद्धता नत्रलन चक्र एवं पर्जन्य चक्र को निर्मित करती है और इन्हीं से सृष्टि का अस्तित्व बना हुआ है। ऋग्वेद के एक मंत्र में इसी भाव को इंगित करते हुए जल देवियों के शोधिका सदा गमनशील, दिव्य, पवित्र रूप का उल्लेख है

या आपो दिव्या उत वा स्ववन्ति

खनित्रिमा उत वा याः स्वयन्जा

समुद्रार्था या शुचयः पावकास्ता

आपो देवीरिहमामुवन्त ।।'

यहाँ ऋषि को मानव मात्र के रोगमुक्त, जीवन के प्रति उतनी ही चिन्ता है जितनी कि प्रकृति के प्रति मैत्री और अहिंसक भाव को वन में मृग भी है और सिंह भी सम्पूर्ण वैदिक साहित्य मानो प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से यही रेखांकित करता सा प्रतीत होता है कि जीवों का वनों में निर्भय विचरण ही जीवन

मा त्वा श्येन उद्वधीमा सुपर्णो मा त्वा विददिघुमान्वीरो अस्ता ।

पित्र्यामनु प्रदिशं कनिक्रदत्सुमंगलों मद्रवाही वदेह ॥

पर्यावरण संतुलन के मूल में जीव वनस्पति आदि के सह अस्तित्व का भाव है। प्रकृति का दिव्य संतुलन भी इसी आधार पर निर्भर है। शाश्वत एवं सर्वोपरि प्रथम नियमों का विवरण जो देवी नियमों की मर्यादा में बंधे हैं, स्थिर पर्वत कभी झुकते नहीं, द्रोह रहित धावा पृथ्वी भी उनका उल्लंघन नहीं करते ऐसा उल्लेख भी वेदों में मिलता है। इस मंत्र में बुद्धिमानों से अपेक्षा की गयी है कि वे प्रकृतिगत दैवी नियमों में रहे अर्थात् प्रकृति के दिव्य संतुलन को न बिगाड़े-

न ता मिनन्ति मायिनो न धीरा व्रता देवानां प्रथमा ध्रुवाणि ।

न रोदसी अहा वैद्याभिनं पर्वता निनमे तस्थिवांसः ॥'

ऋग्वेद में वर्णन आया है कि ऋतुगणों ने पृथ्वी और आकाश के बीच सुरक्षा कवच के रूप में आयन मण्डल का निर्माण करने के साथ ही कवचों का निर्माण किया। ये सुरक्षा कवच ये हैं, जिन्हें आज का विज्ञान ओजोन पर्त

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

के रूप में जान पाया है जो सूर्य से आती पराबैगनी किरणों को परावर्तित और निष्प्रभावी बनाने का कार्य करती है। हमारे प्रगतिशील वैज्ञानिक जिस खतरे को ओजोन क्षय के रूप में 70 दशक में जान पाये उसका पूर्वाभास हमारे वेदज्ञ मनीषियों को युगों पूर्व हो चुका था। प्रकृति में देवों से प्रेरित यह अन्तरिक्ष कवच आकाश के अवाक्षनीय प्रवाहों से भूमण्डल की रक्षा करता है। यह मंत्रों से पुष्ट होता है। अथर्ववेद में मिलता है कि यज्ञ से यह कवच पुष्ट हो सकता है यह विस्तृत देवी स्वरूपा पृथ्वी शुभ संकल्पों से युक्त होकर चर्म रूपी डाल धारण करें। जिससे हम पुण्य प्राप्त करें।

पर्यावरण को क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा का मिला रूप कहा गया है। ऋग्वेद में इनको देवता माना गया है और उनको स्तुति का वर्णन है। यास्क निरुक्त अध्याय 7 से 12 दैवत काण्ड में वैदिक देवताओं पर विवेचन प्रस्तुत करते हुए तीन देवों को मुख्य माना है 1 पृथ्वीस्थानीय अग्नि 2. अन्तरिक्षस्थानीय इन्द्र, वायु 3. स्थानीय सूर्य तिस्त्र एवं देवता इति नैरुक्ताः। संस्कृत वाङ्मय प्रधानतया तीन रूपों में जाना जाता है 1. वैदिक साहित्य 2. लौकिक साहित्य, 3. अर्वाचीन साहित्य वैदिक साहित्य अनन्त ज्ञान राशि के अक्षय भण्डार है। इनमें निहित वैदिक मन्त्रों का मूल मानव कल्याण और पर्यावरण संरक्षण है।

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वत....

विश्वानि देव.... आसुवः ॥

अथर्ववेद के उपवेद आयुर्वेद में वृक्ष लताओं की जड़ों से असाध्य रोगों से समाप्त के उपाय लिखे हुए है, पर यह तभी सम्भव है जब उस पौधे को जड़ की रक्षा वर्तमान प्रदूषण से बचाते हुए की जाया कवियों में अग्रगण्य कालिदास ने पर्यावरण पर अप्रतिम उद्धरण अपने नाटक अभिज्ञानशाकुन्तलम् में दिया है शकुन्तला के विदाई के अवसर पर केवल ऋषि कश्यप ही नहीं अपितु तपोवन के सभी देवता, वृक्ष, पशु और पक्षी दुःखी थे। क्योंकि शकुन्तला जीवित जाग्रत प्रकृति थी। वृक्ष और मनुष्य के बीच परस्पर प्रेम और आपसी समझ को हमारे ऋषियों और मुनियों ने बहुत पहले ही बता दिया था, जिस पर आज वैज्ञानिक अनुसंधान कर रहे हैं आज पर्यावरण रक्षा के प्रति सजगता लाने का प्रयास कर रहे हैं। अभिज्ञान शाकुन्तलम् में कण्व शकुन्तला के बारे में कहते हैं

पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या

नावने प्रियमण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम् ।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आद्ये वः कुसुमप्रसूतिसमये यस्या भवत्युत्सवः

सेयं याति शकुन्तला पतिगृह सर्वैरनुज्ञायताम्।।'

वैदिक काल में ऋषि मुनियों ने मानव जीवन के लिये बड़ी ही सुन्दर परिकल्पना की है- 'सर्वे भवन्तु सुखिनः..... ..दुःखभाग् भवेत्।।" अर्थात् सभी सुखी हो सभी निरोग हो, सभी कल्याण के भागी हों, कोई दुःख का भागी न बने। किन्तु आज वैदिक ऋषि-मुनियों की यह कल्पना चरितार्थ नहीं हो पा रही है। आज के वैज्ञानिक युग में मनुष्य ने जितनी उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं, उससे भी अधिक खोया है। मिट्टी, जल, वायु, वनस्पति, पशु, पक्षी, कीट पतंगे सभी पर्यावरण के अंग हैं। इनमें वनस्पति सहकारी तत्व है जो वायु के शुद्धिकरण में जल के संरक्षण में जल के उत्पादन में, ताप को कम करने में सहायक है। अपने जीवन के बाद भी ये वृक्ष अनेक जीवों के लिए भोजन और खाद पैदा करते हैं। किन्तु मानव अपने थोड़े से लाभ के लिये वनों की अंधाधुंध कटाई करता जा रहा है। एक वृक्ष अपने 50 वर्ष के जीवन में मनुष्य जाति के लिये 25 लाख रूपये के बराबर लाभ पहुँचाता है, उससे प्राप्त हुआ खाद का मूल्य करीब 15 लाख रूपये का होता है, ऐसा वैज्ञानिकों का अनुमान है। मत्स्य पुराण में कहा भी गया है, दस पुत्र समो वृक्षः " अर्थात् दस पुत्र के समान एक वृक्ष होता है। महाभारत में व्यास जी ने हरे वृक्ष को काटना जीव वध के समान बताया है। व्यास जी कहते है:

एतेषां वृक्षाणां छेदनं नैव कारयेत्।

चार्तुमासे विशेषेण बिना यज्ञादिकारणम्॥'

शब्दार्थ सर्ववृक्षाणां = सभी वृक्षों की। छेदनम् = कटाई। 'कारयेत्' = करना चाहिए। चातुर्मासे = वर्षा के चार महीनों में। विशेषेण = विशेष रूप से। विना यज्ञादिकारणम् = यज्ञ आदि किसी पवित्र उद्देश्य के बिना।।

प्रसंग प्रस्तुत श्लोक में बिना किसी विशेष प्रयोजन के वृक्षों को न काटने का परामर्श दिया गया है।

अन्वय एतेषां सर्ववृक्षाणां यज्ञादिकारणं विना छेदनं न कारयेत्। विशेषेण चातुर्मासे एव (एतेषां छेदनं न कारयेत्)।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

व्याख्या महर्षि भृगु कहते हैं कि इन सभी वृक्षों की यज्ञादि विशेष कारण के बिना कटायी नहीं करनी चाहिए; अर्थात् यज्ञादि के समय आवश्यकता पड़ने पर ही वृक्षों को काटना चाहिए। विशेष रूप से वर्षा के चार महीनों में इन्हें नहीं काटना चाहिए।

किन्तु उद्योगों की स्थापना एवं शहरीकरण के कारण बहुत जंगल नुकसानदायक होते जा रहे हैं। बाद, मिट्टी का कटाव पर्यावरण संतुलन को बिगाड़ दे रहा है। ऐसे समय में जरूरी है कि हम ज्यादा से ज्यादा वृक्षों को लगाये और उसकी रक्षा करें। आज मेघ वर्षा भी कर रहे हैं तो तनावयुक्त जबकि मेघदूतम् में कालिदास ने मेघ की बड़ी ही सुन्दर संरचना की है : 'धूमज्योतिः सलिल मरुतां सन्निपातः क्वमेषः " वृक्षों की अंधाधुंध कटाई से वायु प्रदूषण करने वाले कारक बढ़ते चले जा रहे है। वायु प्रदूषण इतना बढ़ता जा रहा है, व्यायाम या सांग भी कारगर सिद्ध नहीं हो पा रहा है। आज हम व्यायामशाला जाये या घरों में व्यायाम करें तब भी हमारे फेफड़े को वहीं प्रदूषित वायु मिलती है। एक सामान्य मनुष्य 22000 बार श्वास लेता है। आज वृक्षों की कतार कम होती जा रही है। वृक्ष स्वयं रोगी होकर सूख जा रहे है। हमारे पशु-पक्षी भी पर्यावरण संतुलन द्वारा पर्यावरण को स्वच्छ करते हैं। पक्षी संरक्षण पर विशेष जोर रामायण में भी मिलता है, जब वाल्मीकि जी बहेलिये को क्रौंच पक्षी को मारते देखते है और अचानक उनके मुंह से श्लोकबद्ध भाव निकलता है:

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः ।

यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।।"

(हे निषाद, तुम अनंत वर्षों तक प्रतिष्ठा प्राप्त न कर सको, क्योंकि तुमने क्रौंच पक्षियों के जोड़े में से कामभावना से ग्रस्त एक का वध कर डाला है । (शब्दकोश के अनुसार क्रौंच सारस की अथवा बगुला की प्रजाति का पक्षी बताया जाता है। किसी अन्य शब्दकोश में चकवा या चकोर भी देखने को मिला है)

सुभाषितानि में जल को रत्न की संज्ञा दी गयी है: 'पृथिव्याः त्रीणि रत्नानि जलमग्न सुभाषितम्।' जल ही जीवन है, किन्तु यह आज दूषित होता जा रहा है। वैसे तो सरकार तरह- तरह का कानून बनाकर जल प्रदूषण को रोक रही है, किन्तु हमें स्वयं जल के महत्व को समझना चाहिये। गंदगियों को उसमें नहीं गिरना चाहिये। गंदे पानी को शुद्ध करके ही नदियों में गिरायें। कूड़े कचरे को गड्ढा बनाकर उसमें डाल दें फिर उसके ऊपर मिट्टी डालकर उसे ढक दें। नदियों में कपड़े न धुले और न ही मवेशियों को नहलायें मरे हुये जीवों को नदियों में न फेंके। इस तरह हम अपने जल को स्वच्छ रख पायेंगे।उद्योगों के लिए ऊर्जा भी एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जिसे कोयला, परमाणु ऊर्जा, जल आदि के माध्यम से प्राप्त किया जाता है जिसमें कोयला व परमाणु ऊर्जा अवशिष्ट के रूप में बहुत ही घातक पदार्थ का विसर्जन जैसी बीमारियों का कारण ही परमाणु के साथ लापरवाही में जापान के नागासाकी व हिरोशिमा जैसी स्थिति होगी। अतः जहाँ मनुष्य एक तरफ प्रकृति से उचित लाभ अर्जित करता है, वहीं दूसरी तरफ वह ऐसे तत्वों के विसर्जन का कारक बनता जाता है, जो उसके अस्तित्व के लिए खतरा बनता जा रहा है। इस बात से यद्यपि मनुष्य अवगत है फिर भी वह इस पर विचार करने के बजाय ऐसी गलतियाँ करता जा रहा है। आज पर्यावरण में संभवतः इतना प्रदूषण नहीं होता, यदि हमने वैदिक ऋषियों के इस निर्देश का पालन किया होता 'शतहस्त समाहर, सहस्वहस्त सकिर" अर्थात् 100 हाथों से लो लेकिन हजार हाथों से दान भी करो हमने प्रकृति से लिया तो बहुत लेकिन उसे दिया कुछ भी नहीं। आज हमें पुनः ऋषियों की वाणी पर मनन और चिन्तन करने की आवश्यकता है।

पृथ्वी पर व्याप्त वे सम्पूर्ण वस्तुएँ जिस पर मनुष्य ने अपने मस्तिष्क का प्रयोग नहीं किया है, प्राकृतिक कहलाता है। प्रकृति के प्रत्येक तत्त्व एक दूसरे की आवश्यकता के पूरक है। मनुष्य भी प्रकृति का एक अंग है। अतः इसे भी अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए प्रकृति पर निर्भर रहना पड़ता है। अतः प्रकृति का दोहन करना पड़ता है। अतः प्रकृति का दोहन करना इसके लिए आवश्यक है। अतः यह इससे मुक्त नहीं हो सकता है। परन्तु यदि वह अन्य प्राकृतिक तत्वों की भाँति आवश्यकतानुरूप ही इसका दोहन करें तो यह मानव प्रकृति संबंध भी संतुलित रहेगा।

वैदिक साहित्य में पर्यावरण प्रदूषण जन्य उक्त समस्याओं के समाधान हेतु पर्यावरण संतुलन, संरक्षण, शोधन, पर्यावरण प्रदूषण निवारण तथा पर्यावरणशोधक अनेक उपायों तथा तत्वों का उल्लेख प्राप्त होता है। वेदों में पर्वत, जल, वायु, वर्षा, अग्नि, सूर्य, पृथ्वी, नदियाँ, वृक्ष-वनस्पतियाँ औषधियाँ ओजोन परत यज्ञ या अग्निहोत्र आदि पर्यावरणशोधक तत्व बताये गये हैं। वेदोक्त पर्यावरणशोधक तत्वों एवं उपायों को अपना कर हम विविध प्रकार की प्राकृतिक आपदाओं एवं प्राकृतिक प्रणालियों की विसंगतियों से उत्पन्न समस्याओं का निराकरण करने में सफलता प्राप्त कर सकते हैं तथा अपने पर्यावरण को शुद्ध, संरक्षित एवं संतुलित बनाए रखने में पूर्ण रूपेण सक्षम एवं समर्थ हो सकते हैं।अस्तु जीवन को सुखमय बनाने के लिये पर्यावरणीय संचेतना की महती आवश्यकता है। पर्यावरण की रक्षा और शुद्धि के उपाय 'वेदों' में निहित है। आधुनिक युग इन बिखरे हुए उपायों का संचेतनाओं का अनुसरण कर वैदिक रीति से पर्यावरण को सुरक्षित एवं प्रदूषण रहित बनाये जाने की आवश्यकता है,अन्यथा मृदा संरक्षण वर्षा जल संरक्षण वर्ष आदि को घोषणा मात्र से हम अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

संग्रन्थावली

1. यजुर्वेद 16/49

2. अथर्ववेद 12/1/27

3. अथर्ववेद 12/1/10

4. अथर्ववेद 12/1/42

5. अथर्ववेद 10/7/32

6 अथर्ववेद 12/1/97

7. अथर्ववेद 1/4/4

8. अथर्ववेद 4/13/3-4

9 अथर्ववेद 3/31/2

10 वेद 10/97/2

11 ऋग्वेद 10/146/5

12 अभिज्ञानशाकुन्तलम् कालिदास 4/9

13 सुभाषितानि

14 मत्स्यपुराण

15 महाभारत

16 पूर्व मेघदूतम्

17. रामायण

18 संस्कृत साहित्य में पर्यावरण प्रो. सुषमा कुलश्रेष्ठ